व्यक्ति के कर्म ही उसको बनाते है श्रेष्ठ-वंदना श्रीजी

सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का हुआ समापन, कृष्ण सुदामा चरित्र का कलाकारों ने किया मंचन, उमड़े हजारों भक्त

इदौर। व्यक्ति के जीवन में संतुलन होना चाहिए, अति को ही विष को कहते है, संसार में अति कभी नही होना चाहिए अति का त्याग करना चाहिए, किसी भी चीज की अति अच्छी नहीं होती है, व्यक्ति अगर कोई बड़े पद पर आ जाता है तो उसमे अहंकार आ जाता है, जबकि अहंकार कभी नही करना चाहिए, अहंकारी कभी नही बने, जीवन में सत्कर्म करे, सत्कर्म नहीं होंगे तो परमात्मा का आशीर्वाद नही मिलेगा।

सत्कर्म बहुत जरूरी है, व्यक्ति को किसी के प्रति दुर्भावना नही रखना चाहिए, व्यक्ति के कर्म ही उसको श्रेष्ठ बनाते है, जिस दिन परमात्मा मनुष्य के जीवन में आ जाते है उस दिन से ही आनंद शुरू हो जाता है, सुख पुण्य का फल है, गौमाता की सेवा करने से पुण्य मिलता है, गोमाता की सेवा हमेशा करना चाहिए, गौमाता की रक्षा करना हर प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है, गौमाता हमारी मां है, हर घर में गौमाता की पहली रोटी होना चाहिए, जिस घर में गौमाता का पालन पोषण होता है उस घर में किसी व्यक्ति की अकाल मृत्यु नहीं होती है, हर मनुष्य गौसेवा का संकल्प लेना चाहिए। यह बाते ब्रज रत्न वंदना श्रीजी ने रसोमा चौराहा स्थित आनंदम क्लब एंड रिसॉर्ट में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद् भागवत महापुराण कथा के सातवें दिन कही। उन्होंने कहा कि जीवन में भगवान का स्मरण करके हर कार्य की शुरआत करना चाहिए।

आयोजन प्रमुख गणेश गोयल और राज दीक्षित ने बताया कि सात दिनों से चल रही श्रीमद् भागवत कथा का समापन हुआ। कृष्ण सुदामा चरित्र का वर्णन किया गया। सैकड़ों महिलाओं ने भजनों पर नृत्य किया, सभी भक्तों ने कृष्ण की बाल लीलाओं का आनंद लिया, 65 से अधिक कलाकारों ने भगवान कृष्ण की लीलाओं का मंचन किया। कथा में सैकड़ों भक्तों का जनसैलाब उमड़ रहा है। भक्तो को भोजन प्रसादी का वितरण किया जा गया है कथा में वंदना श्री जी ने विभिन्न प्रसंगों का वर्णन किया। कथा में भगवान की लीलाओं का कलाकारो ने मनमोहक नाट्य मंचन भी किया। व्यासपीठ का पूजन अर्चन और आरती भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय, विधायक रमेश मेंदोला, महापौर पुष्यमित्र भार्गव, विधायक आकाश विजयवर्गीय, खातेगांव विधायक आशीष शर्मा, समाजसेवी विष्णु बिंदल, गणेश गोयल, राज दीक्षित, बालमुकुंद सोनी, कालू गगोरे ने किया। भागवत महापुराण की विदाई की गई।